

## पद ५९

(रागः खमाज जिल्हा - तालः धुमाळी)

ही शिवा प्रलय हुतभवा अचलवैभवा चंडिका धूमा । मनु यंत्र  
तंत्र शिवशक्ति पराक्रम सीमा ॥थ्रु॥ धगधगित गात्र सुरचकित  
कुलाकुलनमित विश्व प्रलयांबा । अघ कृत्रिम भक्षिणी जीव  
प्राण शिवसांबा । किति वेष करिसि जगपोष देव जयघोष स्तविती  
रुद्राणी । कथिं विधवा कथिं सौभाग्य मुकुट महाराणी ।  
माणिपदक हार शुभ तिलक रथध्वज काक हृत्कमलवासी  
जगत्रयवासी । किति शाकिनि डाकिनि पादसेवनीं दासी । (चाल)  
सिंहासनि श्री धूमावति सद्गुणशीला । वाम सव्य कामेश्वरि  
ललिता श्यामला । परिवार छिन्नमस्ता नवचंडी बगळा श्री बाला ।  
अतिघोर घोर दुर्वार सुषिसंहार सहज करि लीला । उदयास्त मध्य  
प्रौढ वृद्ध मुग्धा बाला ॥१॥ षट्चक्र अर्चनापात्र सुदीक्षा मंत्र हर्ष  
मधुधारा । सर्वात्मशक्ति लय शब्द शांभवी मुद्रा । गुरु वंदु  
अमृतपूर्णेदु योनि चिद्विंदु मनोन्मनीं कामा । गूढात्मशक्ति आलिंगन  
चिद्रति वामा । बलिहवन दृश्य पशुहनन बोध घटपूर्ण शाक्त  
सत्पूजा । महास्मशानि शिव प्रेतासनी प्रसन्न हुतजा । (चाल)  
महाकाली त्रिकुटगिरिवासिनी ही शिवा । उच्छिष्टसुधागमदायिनी  
ही शिवा । सौभाग्य वंशवर्धिनी ही शिवा । श्रीस्तवन धूप जप  
मनन परांबा शरण चिज्वलज्ज्वाला । प्रिय शंकर चिन्मार्तांड वीर्य  
प्रतिपाला ।

भजन

स्फुरद्रूपी श्री जगदंबे । सच्चिदानन्द प्रतिबिंबे ॥